ISSN 2348-8425

सत्राची

SATRACHEE

An International Registered Peer Reviewed Bilingual Research Journal

A UGC-CARE Enlisted
Peer Reviewed Research Journal

वर्ष 11, अंक 38, नं. 1
जनवरी-मार्च, 2023

संपादन

कमलेश वर्मा • आनन्द बिहारी

इस अंक में...

संपादकीय

05 :: जाति के प्रश्न — कमलेश वर्मा

स्पट

07 :: चाक कविता सम्मान, 2022 — संतोष पटेल

आलेख

09 :: स्त्री और आदिवासी स्त्री का पक्ष रखती जसिंता केरकेट्टा की कविताएँ — प्रमोद मीणा

16 :: मैथिली में बहुजन साहित्य की संभावनाएँ — पंकज चौधरी

19 :: जाति का सवाल और निराला — अमिष वर्मा

26 :: संत रैदास के उल्लेखकार — राजेन्द्र प्रसाद सिंह

31 :: हिंदी गीत-परंपरा एवं लोक-मन का यथार्थ — चंद्रकांत सिंह

39 :: लोक कथाओं की प्राचीन परंपरा : संस्कृत साहित्य के संदर्भ में — अनीता कुमारी

45 :: मध्यकालीन हिंदी साहित्य के अनुभव परिसर को विस्तार देती हैं मुग़ल बादशाहों की हिंदी कविताएँ — संगीता मौर्य

57 :: राष्ट्र और राजनीति के आईने में दलित कविता — नीरज कुमार मिश्र

66 :: दिनकर का वह छंद जो गद्य रह गया.... — उज्ज्वल आलोक

72 :: अज्ञेय के संस्मरणों का विधागत वैशिष्ट्य — मुनिल कुमार वर्मा

79 :: भारतीय कथा परंपरा का वैशिष्ट्य और प्रेमचंद का कथा साहित्य — मोहन कुमार

85 :: भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में मंचीय हिंदी कविता की भूमिका — अनिल कुमार अनिवार्य

91 :: भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और हिंदी कविता — अनामिका शिल्पी

98 :: अंतरानुशासनात्मक अध्ययन की दृष्टि और उपयोगिता — शंभुनाथ मिश्र

104 :: प्रोक्ति के पक्ष — धनजी प्रसाद

109 :: नारी जागृति और वृंदावन लाल वर्मा के उपन्यास — शशिकला

114 :: फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों की संरचना और यथार्थवाद — रंजना सिंह

125 :: सुशीला टाकभौरे के उपन्यास 'नीला आकाश' में अभिव्यक्त स्त्री चेतना — रेखा यादव

134 :: चित्रा मुदगल के कथा साहित्य में वृद्ध विमर्श — प्रीति सिंह

141 :: ग्रामीण स्त्रियों का बदलता रूप और शिवमूर्ति की कहानियाँ — सोनी साव

146 :: सिद्ध-नाथ साहित्य, सरहपा और हजारीप्रसाद द्विवेदी की आलोचना दृष्टि — दिवाकर दिव्यांशु

153 :: हिंदी दलित नाटक और रंगमंच — विकास सूर्यकांत वाघमारे

157 :: 'सुगम' का मिज़ाज : 'बुरा लगे तो लगे हमारे ठेंगे से' — सुचिता वर्मा

162 :: विकास का मौजूदा मॉडल, तकनीक और गाँधी — आशुतोष पार्थेश्वर

पूर्वोत्तर की लाली (आलेख)

168 :: 'लप्या' की शिकार स्त्री की पुकार — अभिषेक कुमार यादव

कहानी

181 :: भाइट हाउस... — एस.तरंगिणी

आलेख

हिंदी गीत-परंपरा एवं लोक-मन का यथार्थ

○ चंद्रकांत सिंह

गीत मानव-मन की कोमल अवस्था को दर्शाते हैं। मनुष्य के सभ्यता-विकास की कहानी में गीतों की महती भूमिका है। जब भी मनुष्य के भीतर सौंदर्य की आकंठ प्यास जगी और मनुष्य रूप के जगत में विचरण करने लगा। उसने गीत को अपने आह्लाद को व्यक्त करने का पहला माध्यम बनाया। एक तरह से कह सकते हैं कि गीतों में मनुष्य के चित्त की आर्द्र ध्वनियाँ हैं। इन्हीं ध्वनियों से सौंदर्य के जगत का विकास होता है। शम्भुनाथ सिंह जी अपनी पुस्तक 'नवगीत सप्तक' में कहते हैं कि, "गीत काव्य की आदिम और सनातन विधा है। जब मनुष्य सभ्यता की आदिम अवस्था में था, तभी उसने अपने जीवन को आनंदमय मनाने के लिए एक साधन के रूप में गीत का आविष्कार किया था और उस समय से आज तक यह काव्य-विधा मनुष्य जाति से लगी-लिपटी चली आ रही है। सभ्यता के विकास और उत्थान-पतन के साथ इस काव्य-विधा में भी युगानुरूप परिवर्तन होते आये हैं- किसी युग में उसका उत्थान हुआ तो किसी युग में वह पतन की स्थिति में पहुँच गई, किंतु कभी भी उसकी जड़ें सामाजिक-जीवन से उखड़ कर विलुप्त नहीं हुईं। इसका कारण यह था कि संगीत के समान गीत-काव्य भी मानव की भावात्मक-ऊर्जा के पोषण और संवर्धन के लिए अनिवार्य है। इसी कारण गीत का मानव-जीवन के साथ अविच्छेद्य संबंध है।"[1]

निश्चय ही मानव की जय-यात्रा में गीत महत्वपूर्ण हैं, गीतों में मनुष्य के राग-विराग के साथ आकांक्षाओं, संकल्पों आदि के भी दर्शन होते हैं। एक गहरे अर्थ में गीत मनोरंजन के साथ सामाजिक सरोकारों की युगानुरूप व्याख्या भी करते हैं। हिंदी में आदिकाल से ही गीत रचे जाते रहे हैं किन्तु खड़ी बोली में गीतों की व्यवस्थित परम्परा का प्रारंभ निराला ने किया। निराला गीत-रचना के प्रवर्तक हैं, शलाका-पुरुष हैं जिन्होंने राग, लय एवं ताल के आधार पर गीतों को नया रूप देने का कार्य किया। ऐसा नहीं कि निराला से पूर्व गीतों की परम्परा न थी किन्तु वह जीवन से विलग थी। उसमें दरबारी अभिजात्यता एवं चारणप्रियता थी। सर्वप्रथम निराला ने ब्रजभाषा की दरबारी प्रवृत्ति से गीत परम्परा को विलग किया। उनके गीत जीवन से जुड़े हैं साथ ही इन गीतों में संगीत की अविरल परम्परा दिखती है। अपने गीतों के संदर्भ में निराला स्वयं कहते हैं कि, "मैं खड़ी बोली में जिस उच्चारण-संगीत के भीतर से जीवन की प्रतिष्ठा का स्वप्न देखता आया हूँ, वह ब्रज भाषा में नहीं। ब्रजभाषा के पदों के गाने वाले उस्ताद, प्राचीन उत्तरी-संगीत स्कूल के कलावंत, जिन्हें खड़ी बोली का बहुत साधारण ज्ञान है, मेरे गीत गा न सकेंगे।"[2]

निराला के गीतों में जीवन की व्याप्ति है। रूप-रस-गंध के साथ निराला के सभी गीत भारतीय-बोध को उद्घाटित करते हैं। गीतों में कृत्रिमता या बनावटीपन नहीं है बल्कि गीतों की एक-एक टेक जीवन की व्यथा को उभारती है। निराला ने अपने गीतों के जरिये कोमल अनुभूतियों को तो बानी देनी ही चाही, उनके गीतों में